International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-05-2021, Accepted: 30-05-2021, Published: 16-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 98-100

समसामयिक सिक्किमेली संस्कृत कथा के संदर्भ में "कथा-कलिका"

Hemanth Kumar Nepal
Assistant Professor, Department of Sanskrit Sahitya, Govt. Sanskrit College, Samdong, East Sikkim, India

सारांश
समग्र रूप में देखा जाए तो जो कथनात्मक है उसे कथा कहा जाता हें, जो कथ्य परक हैं उसे कथा कहा जाता हैं एवं जिसको कहा जाता है वो भि कथा हैं। कथा भि दो प्रकार के होते हैं लोक कथा एवं सृजनात्मक कथा। मौखिक, अलिखित श्रुति परम्परा से लोक जिवन में प्रचलित कथा को लोक कथा एवं कथाकार की कल्पनिक अनुभूति से सिर्जित कथा को सृजनात्मक कथा कहा जाता हैं। साहित्यिक गद्य विधा के उपविधा के रूप में कथा का महत्वपूर्ण स्थान हैं। कथा विकास क्रमकी सुरुवात मनव सभ्यता के विकास क्रम से ही हुआ हैं। सिक्किमेली संस्कृत काथा के संदर्भ मे कथा-कलिका प्रथम कथा संग्रह हैं। इसका प्रकाशन सन् २०१८ में हुआ हैं। कथाकार शिवप्रसाद पोख्रेल ने अपने प्रथम कथा संग्रह होने से इसका नाम कथा-कलिका रखा हैं। ये कूल बाध्यता, निश्चला, परिभ्रमणम्, मदीया स्वर्णमुद्रिका कथा, मोहनस्य भाटकगृहान्वेषणम्, अपूर्णः स्वप्नः, वराकिणी कृष्ण, सन्तवीरस्य शिरस्त्रम्, सुष्मिता एवं परिवर्तते दश कथा का संग्रह हैं। समसामयिक कथा लेखन की दृष्टि में कथाकार ने हिमलयीय राज्य सिक्किम को सुख एवं शान्ति प्रदान करने वाली प्रकृति की अनेक रूप की वर्णन के साथ ही स्थानीय सामाजिक व्यवस्था, अवस्था, समस्या आदिका कथा की व्याज से प्रत्यक्ष प्रस्तुत किया हैं। संस्कृत भाषा में स्थानीय विषय ग्रहण के माध्यम से विरचिय इस संग्रह के कथा पाठकों को ज्ञानवर्धन एवं रसास्वादन कराने में सफल हैं। स्वकीयानुभव कथाकार के कथाकारीता की प्रमुख विशेषता हैं। कथा की भाषा-शैली स्वभाविक, सरल, सुमधुर, सुबोध्य एवं प्रभावमय हैं। संस्कृत विभाग, मैत्रेयी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), नई दिल्ली एवं संस्कृत विभाग, रामबचन सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय, मऊ, उ.प्र के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ई-शोध संगोष्ठी में शिवप्रसाद पोख्रेल द्वारा विरचित कथा-कलिका कथा संग्रह के प्रमुख कथाओं का कथाकारिता, प्राकृतिक एवं समसामयिक स्थानीय अवस्था, व्यवस्था और समस्या का अध्ययन किया जाएगा।

मूलशब्द: कथा, कलिका, कथाकारिता, प्रकृति, प्राकृतिक, स्थानीय, व्यवस्था, अवस्था, समस्या, भाषा-शैली।

प्रस्तावना
मानव सभ्यता के साथ हि कथा का उदय हुआ हैं। कथा निर्माण करने, कहने और श्रवण करने की परम्परा मावन समुदायद्वारा आर्जित किए गए भाषिक परम्परा जितने हि प्राचीन हैं। सृष्टि की आदिम काल में मानवद्वारा वनय जीवन की घटनाओं को अपने समूक के अन्य सदस्यओं को कुछ ध्वनि एवं कुछ चेष्टैओं की माध्यम से अवगत कराया। उस दिन से मानव समाज मे आख्यान परम्परा की सूत्रपात हुआ हैं। आज ऐसे कल्पना प्रचलित हैं।[1] आदिम मानव से हि कथा कहने एवं सुनाने की प्रक्रिया का सुरुवात माना जा सकता हैं। पूरा दिन शिकार से थकित व्यक्ति सायम स्ववासस्थान (गुफा) मे लौटकर पारिवारिक सदस्यौं को सारा दिन की घटनाओं को सुनाने की प्रक्रिया से हि कथा का विकास माना जा सकता हैं। भाषा विकास से पहले ही कथा कहने एवं श्रवण करने की क्रमका विकास को पुष्टि करने के लिए प्रसस्त ऐतिहासिक प्रमाण पाया जाता हैं।

पूर्वीय एवं पाश्चात्य दोनों साहित्य सैद्धान्तिक परम्परा में विद्वानों ने कथा की उद्भव और विकास की प्रक्रियाको एक हि तरह से स्वीकारा हैं। इस मे दो मत नही।[2] वेद, रामायण, महाभारत, पुराण, ग्रीसेली परी कथा, दन्त्यकथा आदि से आजका काथा विकास की स्वरुप माना जाता हैं। कथ् धातु में अङ् एवं टाप् प्रत्यय के योग से कथा शब्द की निर्माण किया जाता हैं। इसका साधारण अर्थ कथा, कहानी, कल्कित मंगणंत कहानी[3], वृत्तान्त संदर्भ, गद्यमयी रचनाका एक भेद आदि होता हैं। साहित्यिक विधा के रूप में काथा साहित्य के गद्य विधा की प्रमुख उपभेद माना जाता हैं। उपन्यास से पहले हि इसने गद्य साहित्य के रूप मे अस्तित्व पाया हैं। आज की कथा साहित्य के सन्दर्भ मे प्रयोग किए जाने वाली कथा शब्द को बोध कराने वाली शब्द भिन्न-भिन्न भाषा में भीन्न-भिन्न हैं। जैसे अंग्रेजी में सर्ट स्टोरी कहा जाता हैं तो हिन्दी में कहानी, फ्रान्सेली में नुवेल कहा जाता हैं तो गुजराती में नवलिका, बंगला में गल्प आदि।[4] वास्तव में कथा गद्य में लिखित इतिवृत्तात्मक आख्यान की छोटी इकाई हैं, जीस में जीवन और जगत की एक पक्षीय स्वरुपको घटना, चरित्र, परिवेश आदि की माध्यम से चित्रित किया जाता हैं।

अध्ययन
सिक्किमेली संस्कृत कथा साहित्य के क्षेत्र में सर्वप्रथमोदित कथाकार शीवप्रसाद पोख्रेल की कथा-कलिका कथा संग्रह सरल संस्कृत भाषा-शिल्प में विरचित इतिवृत्तात्मक आख्यानों की छोटी-छोटी इकाईयों का संकलन ही हैं। जिस में जीवन और जगत की दस विषयों को पक्षीय स्वरुप प्रदान करके घटना, चरित्र, परिवेश आदि की माध्यम से दस कथा के रुप में चित्रित किया हैं। इस लेख का प्रमुख उद्देश्य उक्त कथा संग्रह में चित्रित प्रकृतिक सौंदर्य, कथाशिल्प, प्राकृतिक एवं समसामयिक स्थानीय अवस्था, व्यवस्था और समस्या अध्ययन होने सें प्रमुख कथाओं की कथांश से प्रष्ट करने की प्रयत्न किया हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य का उदाहरण
पर्वतक्षेत्रमिदं प्रकृतिमातुः क्रीडास्थलमिति तत्रात्यं वातावरणमेव प्रमाणयति। ग्रामस्यानतिदूरे प्रवहन्त्याः श्रोतस्विन्याः कलकलनादश्रवणसुखेन साकमेव गगनभेदिनां पर्वतशिखराणां श्वेतिमा तद्ग्रामवासिनां चित्ताहरणे नितरां सफला प्रतीयते।[5] (बाध्यता)

इस उदाहरण में प्रकृतिका सुन्दर स्वरूप एवं कोमल स्वभावका वर्णन पाया जाता हैं। प्रकृतिमातुः क्रीडास्थलमिति पद की प्रयोग से काथाकारका प्रकृति प्रति स्रद्धा

[1] नेपाल, घनश्याम, सन् १९९४, नेपाली साहित्यको पिचयात्मक इतिहास, जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसीः पृ. ९२

[2] भण्डारी, राजेन्द्र एवं पारसमणि शम, सन् २००८, भाषा-साहित्य, साहित्य सिर्जना सहकारी समिति लिमिटेड, गान्तोकः सिक्किम, पृ. ९२

[3] शर्मा, विष्णु, हितोपदेशः, वि.सं २०४४, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसीः उ.प्र, पृ. ४ (कथाच्छलेन बालानांनीतिस्तदिह कथ्यते श्लोक ८)

[4] भण्डारी, राजेन्द्र एवं पारसमणि शम, सन् २००८, पूर्वोक्त, पृ. ९२

[5] पोख्रेल, शिवप्रसाद, सन् २०१८, कथा-कलिका, बाध्यता, पृ.२२

भाव व्यक्त होता हैं। कलकलनादश्रवणसुखेन पद की प्रयोग से प्रकृतिक रमण सुखका श्रोत्र बिम्ब चित्रण पाया जाता हैं साथ ही एक ही वाक्य में गगनभेदिनां पर्वतशिखराणां श्वेतिमा तद्ग्रामवासिनां चित्ताहरणे नितरां सफला प्रतीयते पदों की प्रयोग से दृश्य चाक्षुस बिम्ब भि व्यक्त होता हैं। पर्वतक्षेत्रमिदं पद की प्रयोग से स्थानीयता की संकेत प्राप्त होती हैं।

कथाकार ने कथा में सिक्किमस्थ प्राकृतिक वातावरण का मासानुकूल परिवर्तन मनोरम होते हुए शीतोग्रता का चित्रण भि प्रस्तुत किया हैं। उदाहरणार्थः-

> मित्राणि! सम्प्रति शीतर्तुः प्रवर्तते, तत्र च कदाचिनमासेऽस्मिन् हिमपातोऽपि भवति, अतश्चेदानीं तत्रगमनं नानुकूलं वर्तते, वसन्ते ग्रीष्मे वा ऋतौ तत्र गमनं सर्वथानुकूलं भवति, अथवा प्रत्यागमनावसरे सुखेन दुःखेन वा तत्र गमनं भवेच्चेत् कल्याणकरं भविश्यतीति सफलाया विचारोऽयं सर्वैरनुमोदितः।[6] (परिभ्रमणम्)

उक्त उदाहरण में कदाचिनमासेऽस्मिन् हिमपातोऽपि भवति पदें की प्रयोग का उद्देश्य कथाकारका सिक्किमस्थ पर्वतीय क्षेत्रका शीतकालीन समय में अत्यन्त शीतताका चित्र प्रस्तुत करना हैं। दुःखेन वा तत्र गमनं भवेच्चेत् संसयात्मक पदों की प्रयोग से प्रकृतिका उग्र स्वरुप एवं अस्थिर सम्भावना का संकेत किया हैं। उक्त कथा की शिर्षकीकरण एवं कथोपकथन की दृष्टि से कथा को नियात्रा की और संकेत किया हैं। इसी तरह अन्य उदाहरण भि कथा में प्राप्त होते हैं।

कथाशिल्प

कथाकार ने कथा वस्तु के रुप में साधारण एवं स्थानीय परिवेश को महत्व दिया हैं। कथा मे प्रयोग कीया गया भाषा सरल होते हुए भि समास प्रधान हैं। पात्र साधारण एवं ग्रमीण हैं। कथा के माध्यम से स्थानीय संस्कृति, पर्व आदिका परिचय प्राप्त होता हैं। उदाहरणार्थः-

कदाचित् शारदीयनवरात्रपर्वणि, तथा च दीपावलीहोलीमकरसंक्रान्तिप्रभृतिषु जातियराष्ट्रियादिषूत्सवे षुत्सवप्रियैर्जनैर्गीयमानानि नैकविधानि हृद्यानि गीतकानि गृहे वसन् विना प्रयासेनाल्प्रयासेन वा श्रोतुं शक्यते स्म। ग्रामेऽस्मिन् प्रायः सर्वेऽप्युत्सवाः सर्वैरपि तद्ग्रमवासिभिः सोत्साहं परिपाल्यन्ते स्म।[7] (सन्तवीरस्य शिरस्त्रम्)

इस कथा की कथावस्तु अत्यनत्त साधारण होते हुए स्थानीयता की गुण से उतना ही प्रभावशील हैं। कथा में विकाशसील ग्रामीण परिवेश का चित्रण हैं। सिक्किमस्थ ग्रामीण परिवेश में शारदीय नवरात्र, दीपावली, होली, मकरसंक्रान्ति आदि पर्व का विशेष महत्व हैं। ये भातरीय राष्ट्रिय पर्व होते हुए भी सिक्किमस्थ ग्रामीण जनजीवन में भिन्न एवं विशेष रूप से मनाया जाता हैं। कथा की शिर्षकिकरण हि सन्तवीरस्य शिरस्त्रम् करने से साधारण कथावस्तु का परिचय प्राप्त होता हैं और कथा में प्रयुक्त पात्र साधारण एवं ग्रमीण का संकेत मिलता हैं। उक्त गद्यांश की भाषा साधारण संस्कृत होते हुए भि समास प्रधान हैं।

प्राकृतिक एवं समसामयिक स्थानीय अवस्था

प्राकृतिक एवं समसामयिक स्थानीय अवस्था का चित्रण परिवर्तते कथा में दिशने को मिलता हैं। इस कथा में ग्रामीण निम्न वर्ग के तुलाधर नाम के प्रतिनिधि चरित्र या पात्र के माध्म से सम्पूर्ण निम्न वर्ग के व्यक्तियों का जीवन संघर्ष का कथात्मक चित्रण किया हैं। कथाकार ने कथा के सुरुवात में ही **न जाने विधिरपि**[8] पदों की प्रयोग से निम्न वर्ग के व्यक्तियों के संघर्ष के प्रति अपना सहहृदयता व्यक्त किया हैं। इस कथा को अगर प्रगतिवादी दृष्टिकोण के आधार में अध्ययन किया जाए तो कथाकार की प्रगतिवादी विचारधारा के प्रति झुकाव प्राप्त होता हैं। इस कथा के आधार में कथाका पोख्रेलको सामाजिक यथार्थवादी संस्कृत कथाकार के वर्ग में रखा जा सकता हैं। सिक्किमेली साधारण समाज में आज भी मालिकाना प्रथा विद्यमान हैं। अपने पिता प्रपिता द्वारा खुद की पुस्तैनी जमीन जायदाद बेचकर पूर्वोत्तर भारत के असम, मनिपुर आदि राज्यों में रोजगार, आर्थिक अभाव आदि के कारण पलायन होने के बाद वहाँ पर भि संघर्षमय जीवन यापन करके फिर सिक्किम लौटे हुए एक परिवार की जीवन संघर्ष की माध्यम से इस कथा में समग्र स्वस्थानीयता, आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक किनारिकृत वर्ग का चित्रण किया हैं। पिता एवं प्रपिता की पलायनवादी क्षणिक सोच से पलायित परिवार भुविस्थापित बन जाता हैं। पुनः लौटकर पुनस्थापना के आशा में मालीक की खेती करने में विवश बन जाता हैं। अपने बच्चों बृद्ध माता पिता के लालन पालन के लिए दिन रात मेहनत करता हैं। बच्चों को उचित शिक्षा देने सोच में खुद की खुसी को बलिदान करता हैं। पारिवारिक एवं आर्थिक संघर्ष के कारण अभाव ग्रसित व्यक्ति खुद की जीवन को नस्ट करने की स्थिति में पहुँच जाता हैं पर भि भविष्य की आशा से कभी हतास हुए विना संघर्ष करता हैं। इसी कथा में प्राकृतिक दृष्टान्त के माध्यम से स्थानीय समसामयिक अवस्था की चित्रात्मक अभिव्यक्ति पाया जाता हैं। किन्त्वद्य खलु अस्ताचलपर्वतस्य यात्री तेजपुञ्जो मरीचिमाली कदा स्वकीयमसह्यं तेटोराशिमुपसंहृत्य संतप्तहृदयं शरीरं वा सुखयति? आदि दृष्टान्तों से प्राकृतिक अवस्था द्वारा समसामयिक स्थानीय अवस्था की अभिव्यक्ति पाया जाता हैं। उक्त दृष्टान्त में तुलाधर के परिवार की संघर्षमय जीवन चरित्र के साथ ही अपने वृद्ध माता पिता के अवस्था का भि चित्रण प्रस्तुत किया गया हैं। इसी कथा में स्थानीय समसामयिक उच्च आर्थिक एवं निम्न आर्थिक व्यक्तियों विच के शैक्षिक, सामाजिक पार्थक्यता का भि चित्रण पाया जाता हैं। अन्त में इस भिन्नता की पूर्ति द्वारा उक्त पार्थक्यता को समाधान भी किया हैं। कथाकार में आदर्शवादी विचारधारा होने से अगर भग्य और विधाता नें साथ दिया तो उक्त स्थिति परिवर्तित भि हो सकता हैं जैसे दिन रात में और रात दिन में परिणत होता हैं उसी तरह सम्पन्न व्यक्ति के परिवार खुद की घमण्ड के कारण बच्चों को उचित संस्कार न देने के कारण विपन्न बन जाता हैं और विपन्न परिवार परिस्रम की कारण सम्पन्न बन जाता हैं। अतः अगर व्यक्ति आशावादी हो और आत्माविस्वासी हो तो परिश्रम फलित हो जाता हैं। इस कथा में सिक्किम में समसामयिक अवस्था में विद्यमान उक्त स्थितियों का प्राकृतिक दृष्टान्तों की माध्यम सें समुचित कथात्मक चित्र प्रस्तुत पाया जाता हैं।

स्थानीय व्यवस्था

सिक्किम की स्थानीय सरकारी एवं गैर सरकारी व्यवस्था युगानुकूल एवं समयसापेक्ष हैं। छोटी रीज्य एवं जनसंख्या कम होने के कारण सरकारी सविधा सभी वर्गों के व्यक्ति के लिए उपलब्ध होती हैं। सरकारी कर्मचारी एवं व्यक्तिगत संस्था में कार्यरत कर्मचारी गणों का अपने व्यवसाय के प्रति इमान्दारिता देखने को मिलती हैं। हर कोही दुसरों की निस्वार्थ सेवा के लिए सिक्किमेली परिस्थिति में प्रवृत्त होता हैं। उक्त स्थानीय व्यवस्था का चित्रण काथाकार के विभिन्न कथा में पाया जाता हैं। उदाहरणः-

> चिकित्सालये परिचारिकाश्चिकित्सकाश्च रोगिणां परिचर्यार्थमितस्ततो द्रुतगत्या धावमानाः सन्ति। प्रयो दिवानिशमेव चिकित्सालये प्रवेशितानाम्, प्रवेशार्हाणां चातुराणां सेवायं संल्लग्ना दृश्यन्ते चिकित्सकाः स्वास्थ्यकर्मिणश्चा[9] (अपूर्णस्वप्नः)

इस कथा में सिक्किम की एस.टि.एन. एम अस्पताल की व्यवस्था का चित्रण पाया जाता हैं। उक्त कथा की माध्यम से कथाकार ने सम्पूर्ण सिक्किम की चिकित्सा व्यवस्था की चित्रण किया हैं। स्वाथ्य कर्मीयों की अपने कर्तव्यों की प्रति इमानदारिता, उत्तरदायित्व बोध एवं कर्तव्य परायणता का प्रसंसा किया हैं। सिक्किम सरकार की निशूल्क चिकित्सा व्यवस्था की माध्यम से सम्पूर्ण सिक्किम की व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत किया हैं।

[6] पोख्रेल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, परिभ्रमणम्, पृ. ४४

[7] पोख्रेल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, सन्तवीरस्य शिरस्त्रम, पृ. ८९

[8] पोख्रेल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, परिवर्तते, पृ. १०९

[9] पोख्रेल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, अपूर्णस्वप्नः, पृ. ७१

स्थानीय समस्या

समस्या रहित स्थान एवं राज्य विश्व में कही भि नही हैं। अतः एव कथाकार पोख्रेल ने इस कथा संग्रह के सभी कथाओं में किसी न कसी रुप में स्थानीय समस्या का चित्रण किया हैं। उदाहरणः-

> सा निखिलामपि पीडां शमीवृक्षे समाप्यात्मानं चिन्तामुक्तां कर्तुमिव तस्य समीपं प्रतीयसे स्म तदानीं।[10] (निश्चला)

प्राय विश्व में ही नारी एवं पुरुष में भिन्नता की भावना आज भि विद्यमान हैं। सरकार द्वारा नारी के हितार्थ के लिए विभिन्न कानुन एवं व्यवस्था निर्माण किए जाने पर भि सामाजिक मान्यता, व्यवस्था एवं पितृ प्रधानता के कारण नारी की किसी न किसी रुप में शोषण होता ही रहता हैं। बालिकाओं की सुरक्षार्थ सरकार द्वारा विभिन्न योजना बन गए हैं और बनते रहते हैं। पर कार्यवयन में उतनी सफलता प्राप्त नही होती। इस का प्रमुख कारण नारी की शहनसील स्वभाव ही हैं। जब तक खुल कर नारी खुद अपनी खुद की शोषण की विरोध नही करती तब तक इस प्रका र की समस्या समाज में प्रतिदिन होती रहती हैं। सिक्किम में भि इस प्रकार की, समस्या समाज में विद्यमान हैं। उक्त नारी समस्यओं का चित्रण कथाकार पोख्रेल नें निश्चला, सुष्मिता आदि कथा के माध्यम से किया हैं। अगर कथाकार पोख्रेल की निश्चला, सुष्मिता आदि कथाको नारीवादी सिद्धान्त के आधार में अध्ययन किया जाए तो कथाकार को नारीवादी कथाकार कहा जा सकता हैं। इतना हि नही कथाकार नें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक,जातीय आदि समस्या का भि काथाओं में चित्रण किया है।

निष्कर्ष

कथाकार शिवप्रसाद पोख्रेल सिक्किमेली संस्कृत कथा साहित्य के प्रथम कथाकार हैं। उनका कथा-कलिका कथा संग्रह सन् २०१८ में प्रकाशित हुआ हैं। ये उनकी प्रथम कथा संग्रह हैं। इस कथा संग्रह में कूल दश कथा हैं। ये बाध्यता, निश्चला, परिभ्रमणम्, मदीया स्वर्णमुद्रिका कथा, मोहनस्य भाटकगृहान्वेषणम्, अपूर्णः स्वप्नः, वराकिणी कृष्ण, सन्तवीरस्य शिरस्त्रम्, सुष्मिता एवं परिवर्तते हैं। सरल भाषा-शैली, सामासिक गद्य, अनुप्रास एवं अन्तरानुप्रास विहीनता, स्थानीयता का चित्रण, सहजता, सामाजिक यथार्थता, तत्काल प्रभावमय, उपदेशात्मक, निम्नवर्ग सहृदयता की अभिव्यक्ती, आदर्शवादी अवधारणा, प्रकृति प्रेम, यथार्थ अभिव्यक्ति, आदि कथाकार पोख्रेल के कथाओं के विशेषता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अधिकारी, अम्बिकाप्रसाद, सन् १९९६, साहित्य-समालोचना, काठमाडौं : श्रीमती लोकलक्ष्मी अधिकारी
2. अधिकारी, हेमाङ्गराज, सन् १९९९, पूर्वीय समालोचना-सिद्धान्त (छै.सं), ललितपुर : साझा प्रकाशन
3. आप्टे वामन शिवराम, सन् २००२, संस्कृत-हिन्दी कोश, जयपुर : रचना प्रकाशन
4. नेपाल, घनश्याम, सन् १९९४, नेपाली साहित्यको परिचयात्मक इतिहास, वाराणासीः जय भारत प्रिटिंग प्रेस
5. पोख्रेल, शिवप्रसाद, सन् २०१८, कथा-कलिका
6. भण्डारी, राजेन्द्र एवं पारसमणि शम, सन् २००८, भाषा-साहित्य, गान्तोकः साहित्य सिर्जना सहकारी समिति लिमिटेड, सिक्किम
7. विश्वनाथ, सन् २०००, साहित्यदर्पणः, व्याख्या, सत्यव्रत, सिंह, वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन
8. शर्मा, विष्णु, वि.सं २०४४, हितोपदेशः, वाराणसीः चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, उ.प्र,

[10] पोख्रेल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, निश्चला, पृ. ४१